७४ प्र: जो लोग तुम पर बुराई करें तो उनपर क्या करना।
उ: बुराई के बदले में भलाई करना॥
७५ प्र: क्या बुरे बचन बोलना उचित है।
उ: बुरे बचनों से परमेश्वर बहुत क्रोधित होता है॥
७६ प्र: कौन सी चिज़ों को न लेना।
उ: जो मेरा नहीं है सो न लेना॥
७७ प्र: क्या झूठ बोलना कभी उचित है।
उ: नहीं सदा सत्य बोलना चाहिये॥
७८ प्र: सब झूठ बोलनेहारों का भाग कहां होगा।
उ: सब झूठ बोलनेहारोंका भाग नरक कुंडमें होगा॥
७९ प्र: कौन सी चीजों का लालच न करना।
उ: दूसरों की चीज़ों का लालच न करना॥
८० प्र: क्या दसतूर पर चलना कि नहीं।
उ: जो दसतूर अच्छा होवे तो उस पर चलना जो बुरा होवे तो उसको छोड़ देना॥

प्रार्थना और सुसमाचार के फैलानेके बिषय में।

८१ प्र: कम से कम कितनी बेर प्रार्थना करना चाहिये।
उ: निश्चय करके सबेरे और साझ को प्रार्थना करना॥
८२ प्र: क्या अनएक मत हैं जिस से हमको मुक्ति मिलेगा।
उ: केवल प्रभु योशुके धर्म्म से हमको मुक्ति मिलेगा।
८३ प्र: किस चाल चलन से हम योशुका धर्म्म फैला सकते हैं।
उ: हम लोग अच्छे चाल चलनसे योशुके धर्म्म फैलाने की सहायता कर सकते हैं॥
८४ प्र क्या हम और काम कर सकते हैं सुसमाचार फैलनेको
उ: हम औरों को योशुका धर्म्म सिखलावें और उस के फैलाने के लिये प्रार्थना कर सकते हैं।